RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 18वां
अक्टूबर से दिसंबर 2025

अंक : 70वां

वत्थु सहावो धम्मो

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

कन्वेंशन
14-17
गुरुवार से रविवार
अगस्त 2025

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन दिल्ली

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक

- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन – डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका
- श्रीमति कोमल-नीरज जैन, नीरू केमिकल्स, दिल्ली

संरक्षक

- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/ श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :

- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता
- विरांशी, सिद्धांत, जानकी गाला, मुम्बई

1. सूची 1
2. संपादकीय 2-3
3. हमारे गौरवशाली इतिहास-भगवान पार्श्व. 4
4. सराक जाति और जैन धर्म 5-6
5. हमारी पाठशाला - शरीर 7-8
6. हमारी पाठशाला - क्या आप पानी... 9
7. क्या चाणक्य जैन मुनि 10
8. प्रेरक प्रसंग - स्वाभिमान 11
9. हाथी की करुणा 12
10. शील और शक्ति 13
11. अब नहीं बोलूंगी 14-15
12. हमारे तीर्थ - वाराणसी 16
13. दीपावली पोस्टर 17-18
14. यूथ कन्वेंशन की झलकियां 19
15. छोटी सी कहानी - प्रसन्नता का.... 20
16. प्रेरक प्रसंग - अवसर 21
17. क्या जैनी कुत्ता पाल सकते है... 22-23
18. जान से प्यारा पैसा 24
19. समाचार 25-26
20. हमारे मुनिराज 27
21. अनुयोग ज्ञान पहेली 28
22. ड्रेगन फ्रूट...... 29-30
23. देश के प्रख्यात हिंदू मंदिरों.... 31-32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

मुद्रण व्यवस्था : स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क - 500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700
PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं।

संपादकीय

प्राचीन मान्यतायें और उनके छिपे अर्थ

हमारे समाज में कई मान्यतायें प्रचलित हैं। इन मान्यताओं में कुछ हिन्दू शास्त्रों में लिखीं हैं और कुछ हमारे पूर्वज अपनी अगली पीढ़ी को सुनाते रहे हैं। इन सभी मान्यताओं को धार्मिकता के साथ जोड़ दिया जाता है और समाज बिना समझे धर्म का आदेश मानकर इन मान्यताओं के अनुसार करता रहता हैं और कुछ समझदार कहे जाने वाले लोग इन मान्यताओं को अंधविश्वास या पुरानी सोच कहकर मजाक उड़ाते हैं। लेकिन वास्तव में हमें इन मान्यताओं के प्रचलन के पीछे सोच को जानना जरूरी है। यदि गहराई विचार करें तो महसूस होगा कि अधिकांश मान्यताओं के पीछे वैज्ञानिक सोच या समाज हित जुड़ा हुआ है।

उदाहरण के लिये प्राचीन मान्यता के अनुसार रात्रि में नाखून नहीं काटना चाहिये। इसके पीछे सोच यह रही होगी कि पहले लाइट की उपलब्धता नहीं थी, मात्र लालटेन अथवा दीपक से ही काम चलाया जाता था। यदि अंधेरे में या कम प्रकाश में नाखून काटेंगे तो उंगली कटने का डर रहता है।

रात्रि में झाड़ू नहीं लगाना - रात्रि में झाड़ू लगाने से अंधेरे में छोटे-छोटे जीव नहीं दिखेंगे तो उनका घात होने की संभावना है और हो सकता है कि कोई कीमती चीज गिर गई हो तो वह कचरे के साथ बाहर चली जायेगी।

गाय को माता के समान मानना - समाज में आज भी गाय को कई लोग माँ की उपमा देते हैं। उसको मारने को पाप समझा जाता है। गाय की पूजा की जाती है। इसका कारण यह है कि गाय मात्र नहीं बल्कि गौ वंश दूध देने का मुख्य साधन है। यदि गाय को ही मार दिया जायेगा तो दूध कहाँ से आयेगा ?

नदियों को माता की उपमा - शास्त्रों में धर्म गुरुओं ने नदियों को भी माँ माना है। हिन्दू शास्त्रों में नर्मदा मैया, गंगा मैया आदि नदियों के नाम मिलते हैं। इसके पीछे सटीक सोच यह रही होगी कि पानी मुख्य स्रोत आज भी नदियाँ ही हैं। यदि नदियों की सुरक्षा नहीं की गई, उसमें कचरा डालते रहे तो स्वच्छ पानी कैसे मिलेगा ? इसलिये नदियों को पूज्य बताया।

दही खाने से कार्य अच्छा होता है - आज भी अनेक लोग परीक्षा आदि कार्य के पूर्व घर से दही खाकर बाहर निकलते हैं। दही ठंडा होता है और इसे खाने के अनेक फायदे हैं। इससे मन शांत होता है और शांत मन से किये गये कार्य अच्छे से होते हैं।

खड़े-खड़े खाने से अनाज का अपमान होता है - ऐसा कहकर हमारे पूर्वज अनाज के प्रति हमारे दायित्वों की याद दिलाते थे। खड़े-खड़े भोजन करने से सही तरीके से भोजन नहीं होता और भोजन यहाँ-वहाँ गिरने से जीव पैदा जाते हैं, जिससे जीव हिंसा होती है। वे झूठा छोड़ने को भी अनाज का अपमान कहते हैं क्योंकि एक किसान महीनों की मेहनत से अनाज का पैदा करता है और इस देश में हजारों लोगों को पेट भर भोजन नहीं मिलता।

तुलसी, पीपल, नीम आदि पूज्य पेड़ हैं - भारतीय हिन्दू संस्कृति में अनेक पेड़ों को भी भगवान का दर्जा दिया गया और कहा गया इसमें अनेक देवी-देवता निवास करते हैं। इसका कारण यह रहा कि वृक्ष हैं तो जीवन है। प्रत्येक घर में तुलसी के पौधे की अनिवार्यता इसलिये थी कि अनेक छोटी बीमारियों में तुलसी के पत्ते औषधि के रूप में काम में आते हैं। यदि इस तरह के वृक्ष ही नहीं रहेंगे तो शुद्ध हवा कैसे मिलेगी ? और बारिश के प्रमुख कारण में वृक्ष भी हैं। दक्षिण भारत की अनेक संस्कृतियों में नये घर के निर्माण के पहले एक नारियल का पेड़ का रोपण किया जाता था। उसी की देन है कि आज वहाँ हर घर में नारियल का पेड़ होता है।

इस तरह की सैकड़ों मान्यतायें समाज में प्रचलित हैं। लोग इन मान्यताओं को जीवन में अपनायें इसलिये धर्म के आदेश डर दिखाया गया। पर आज की पीढ़ी ने इसे अंधविश्वास कहकर छोड़ दिया पर उसके पीछे की धारणा को नहीं समझा, जिसका बुरा परिणाम यह रहा है आज पर्यावरण बिगड़ रहा है। समय पर बारिश न होना या बारिश कम होना, शहरों-गांवों में पानी की कमी, बड़े बुर्जुगों के प्रति सम्मान का अभाव, हिंसा की अधिकता जैसी समस्यायें सामने आ रहीं हैं। हम इन मान्यताओं के धार्मिक रूप में बिल्कुल न मानें, पर उनकी महत्ता को समझना और बताना हमारा दायित्व है। हम अपने बच्चों को अच्छी पढ़ाई देना तो अपना कर्तव्य समझते हैं परन्तु उन्हें सामाजिक कर्तव्य सिखाने के प्रति गंभीर नहीं हैं। आज की शिक्षा पद्धति भी प्राचीन परम्पराओं को नष्टकर आधुनिक खोखले मूल्य सिखा रही है।

अब अभिभावकों का ही कर्तव्य है कि अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा के साथ हमारे प्राचीन मूल्य, उनके उद्देश्यों का ज्ञान दें, जिससे हमारा और बच्चों का आने वाला कल बेहतर हो सके।

- विराग शास्त्री

भगवान पार्श्वनाथ :
चीन और यूनान की नजर से

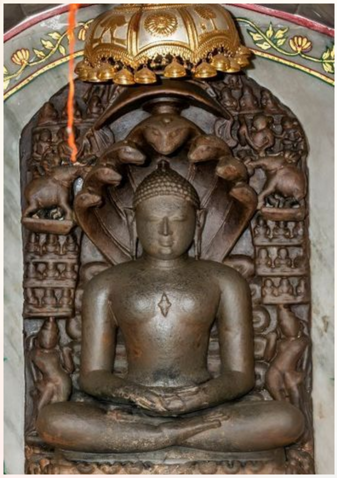

समय - समय पर मिलने वाले पुरातत्व और ग्रन्थों के प्रमाण इस बात की पुष्टि करते रहे हैं कि जैन धर्म अनादिकाल का है। वैदिक और हिन्दू ग्रन्थों में भगवान ऋषभदेव, भगवान नेमिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ और भगवान महावीर का उल्लेख प्राप्त होता है। चीन और यूनान की सभ्यता में भगवान पार्श्वनाथ का विशेष स्थान प्राप्त है।

प्राचीन चीनी और यूनान के ग्रन्थों और यात्रियों के विवरणों भगवान पार्श्वनाथ का उल्लेख प्राप्त होता है। पाँचवी शताब्दी में लिखे चीनी बौद्ध ग्रन्थ महापरिनिर्वाण सूत्र (फो शुओ निए पान जिंग) में भगवान पार्श्वनाथ की चर्चा की गई है। उसी समय के चीनी साहित्य दुनिया की नई कथायें (शि-शुओ-शिन्यु) ग्रन्थ में जैन आचार्यों के नाम प्राप्त होते हैं। चीनी के रहने वाले ह्वेनसांग महान विदेशी यात्री थे। इन्होंने सन् 629 और 645 में भारत की यात्रा की। इन्होंने अपनी पुस्तक में भारत के निर्ग्रन्थ दिगम्बर जैन साधुओं के दर्शन, उनके कठोर तप, नग्नता और विचारधाना का बहुत वर्णन किया है और यह कहा कि भगवान महावीर के पहले भी दिगम्बर धर्म की परम्परा भारत में विद्यमान थी।

मध्य एशिया के प्राचीन नगर कैस्पिया, समरकंद, बल्ख, अमन में सम्राट सिकंदर के यूनानी साथियों ने दिगम्बर साधुओं के दर्शन किये थे। डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन ने अपनी पुस्तक भारतीय इतिहास - एक दृष्टि में लिखा है कि यूनान के इतिहासकार हेरोडोटस ने बताया कि छठ्वीं शताब्दी में भारत में ऐसा धर्म प्रचलन था जिसमें मांसाहार पूर्णतः वर्जित था, इस धर्म को मानने वाले मात्र अनाज और फल सेवन किया करते थे। महान दार्शनिक और गणितज्ञ पाइथागोरस भगवान महावीर के समय हुये। वे पुनर्जन्म, कर्म और अहिंसा मे विश्वास करते थे। यहाँ तक कि वे कुछ वनस्पतियाँ भी नहीं खाते थे। इनके विचार जैन परम्परा से मिलते थे।

सराक जाति और जैन धर्म

सराक जाति उत्तरप्रदेश और बिहार की तीर्थंकरों के समय की जाति रही है। मूलतः सराक जाति नहीं बल्कि जैन धर्म के सदाचारी लोगों के समूह का नाम है जिसे **श्रावक** कहा जाता था बाद में श्रावक से **सराक** कहा जाने लगा। जैन धर्म के विध्वंस में अनेक विधर्मी राजाओं का योगदान रहा। सराक जाति को मिटाने में पालवंशीय राजा गोविन्दपाल का मुख्य योगदान रहा।

सन् 1174-1176 में बिहार और बंगाल क्षेत्र में गोविन्दपाल नाम का राजा हुआ। इस राजा ने ऋजुपालिका नदी अजय नदी के किनारे पर बसे सभी शहरों में श्रमण संस्कृति के विनाश करने का अभियान चलाया। यह अभियान मृदावली (मुंगेर) से प्रारम्भ हुआ और अजय नदी के हर किनारे के हर शहर में रहने वाले जैन मंदिरों को तोड़ता और जैन मूर्तियों के स्थान पर विष्णु आदि देवों को स्थापित करता रहा। जैन धर्म के श्रावकों को धर्म परिवर्तन के लिये धमकी देता और न मानने पर उनकी हत्या तक कर दी जाती थी। इस अभियान में गोविन्दपाल ने तीर्थंकरों के नाम पर बसे गांवों को गोविन्दपुर नाम दिया। आज भी अजय नदी के तट पर कई गांवों के नाम गोविन्दपुर हैं। कई जैन मंदिरों की मूर्तियों को तोड़कर उनके स्थान पर पशु बलि स्थान बना दिये गये। हजारों जैन श्रावकों ने मजबूरी में जैन धर्म छोड़कर वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया, कई सच्चे श्रावकों ने जैन धर्म तो नहीं छोड़ा पर अपना नगर ही छोड़ दिया। इस तरह पूरे पूर्वांचल में विकसित श्रमण संस्कृति को लगभग नष्ट कर दिया।

इस इतिहास को सुनकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा -

जिन श्रेष्ठ सांधों पर सुगायक श्रुति थे घोलते।
निशी मध्य टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते।।
सोते रहो रे जैनियो हम मौज करते हैं यहाँ।
प्राचीन चिन्ह विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ ।।

कुछ सराक श्रावक उड़ीसा में जाकर बस गये। यहाँ इनकी दो जातियाँ आज भी हैं जिन्हें रंगून जाति और सराक जाति कहा जाता है। रंगून को रंगिया भी कहा जाता है। रंगिया कपड़े रंगने का कार्य करते हैं और लगभग पशुपालक हैं। यह जाति पुरी, कटक, बरहमपुर, गंजाम आदि जिलों में बहुत संख्या में हैं। ये जाति हर वर्ष खण्डगिरि और उदयगिरि की यात्रा करती है। पूर्व संस्कारों से यह जाति पूर्णतः शाकाहारी है और ये लोग रात्रि भोजन करना पाप समझते हैं। कपड़े रंगने के लिये छने जल का प्रयोग करते हैं। कपड़े रंगने के पानी को शाम होने से पहले ही मिट्टी में मिला देते हैं जिससे पूरी रात रंग के पानी में जीव हिंसा न हो। इनके यहाँ विधवा विवाह का निषेध है। कार्तिक कृष्ण अमावस्या महावीर निर्वाण दिन को दीपक जलाकर लड्डू बांटते हैं, इसे ये लोग मुक्ति दिवस व ज्ञान प्राप्ति दिवस कहते हैं। लड़कियों को लड़कों के बराबर पढ़ाते हैं। इनके गुरु नग्न होते हैं जिन्हें **अलक** कहा जाता है। ये गुरु मात्र लंगोट बांधते हैं, मोर पंख और नारियल का कमण्डल हमेशा अपने पास रखते हैं और एक बार ही हाथ में भोजन, दवाई, पानी लेते हैं।

रंगिया जाति के निवास क्षेत्रों में दिगम्बर परम्परा के जैन मंदिरों के अवशेष आज भी मिलते हैं।

पौराणिक कथा-

क्षमा में भी वीरता

गुप्त साम्राज्य मगध के अंतिम सम्राट वृहदरथ को उनके सेनापति पुष्यमित्र ने धोखे से मार डाला और स्वयं सम्राट बन गया। पुष्यमित्र को जैन धर्म से बहुत द्वेष था। इसलिये उसने सम्राट बनते ही आदेश दिया कि जो भी सैनिक अथवा नागरिक एक श्रमण जैन मुनि का मस्तक लाकर देगा उसे 100 स्वर्ण मुद्रायें पुरस्कार में दी जायेंगीं। यह घोषणा सुनकर सम्पूर्ण जैन समाज में खलबली मच गई और अपने गुरुओं का अपमान और सर्वनाश देखकर जैन साधर्मी बहुत दुःखी हो गये।

यह समाचार कलिंग सम्राट खारवेल के पास पहुँचा। सम्राट खारवेल जैन शासक था, उसे जैन धर्म और गुरुओं का बहुत बहुमान था। खारवेल ने प्रतिज्ञा की - जब तक इस अन्याय का बदला नहीं ले लूँ तब तक राजधानी लौटकर नहीं आऊँगा। सम्राट खारवेल ने मगध पर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध हुआ और इस युद्ध में पुष्यमित्र हार गया। पुष्यमित्र को बन्दी बना लिया गया। सम्राट खारवेल चाहते तो पुष्यमित्र की हत्या भी कर सकते थे पर पुष्यमित्र के क्षमा मांगने पर खारवेल ने कहा कि एक शर्त के साथ तुम्हें क्षमा कर दिया जायेगा कि जो भगवान आदिनाथ की प्रतिमा जिसे कलिंग जिनमूर्ति कहा जाता था उसे वापस कर दें। यह प्रतिमा अशोक के शासनकाल में कलिंग से उठाकर ले गये थे।

पुष्यमित्र ने इस शर्त को आदेश मानकर स्वीकार किया और बाद में कलिंग जिन प्रतिमा कलिंग वापस भेज दी और सम्राट खारवेल ने पुष्यमित्र को क्षमा कर दिया।

शरीर

आईये हम जानते हैं कि जैन दर्शन के अनुसार शरीर किसे कहते हैं और यह कितने प्रकार का होता है -

जो नाम कर्म के उदय से प्राप्त होकर शीर्यन्ते अर्थात् गलते हैं, वे शरीर हैं अथवा अनंतानंत पुदगल परमाणुओं के मिलने का नाम शरीर है। शरीर को बदन, देह भी कहा जाता है।

शरीर पाँच प्रकार होते हैं -

1. औदारिक शरीर - मनुष्य और तिर्यन्चों का जो शरीर सड़ता - गलता है वह औदारिक शरीर है। यह उराल अर्थात् स्थूल अनंत पुदगल परमाणुओं से बना हुआ होता है इसलिये औदारिक कहलाता है।

2. वैक्रियक शरीर - विक्रिया अर्थात् विशेष शक्ति के द्वारा शरीर को छोटा-बड़ा, हल्का-भारी बना लेते हैं। विक्रिया ही जिस शरीर का प्रयोजन है वह वैक्रियक शरीर कहलाता है।

3. आहारक शरीर - छठवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज को किसी भी तत्व के सम्बन्ध में जानने की इच्छा होने पर उनके मस्तक से एक हाथ ऊँचा पुतला निकलता है और जहाँ भी केवली भगवान या श्रुत केवली होते हैं, वहाँ जाकर अपनी जिज्ञासा का समाधान करके वापस आ जाता है। इसे आहारक शरीर कहते हैं।

4. तैजस शरीर - औदारिक, वैक्रियक और आहारक शरीर को कान्ति अर्थात् चमक देने वाला तैजस शरीर कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है -

अनिस्सरणात्मक तैजस - यह सभी संसारी जीवों को होता है।

निस्सारणात्मक तैजस - यह मात्र ऋद्धिधारी मुनिराजों को ही होता है। यह भी दो प्रकार होता है -

शुभ तैजस - जगत को रोग, दुर्भिक्ष आदि से दुखी देखकर जिन मुनिराज को दया का भाव उत्पन्न होता है तब उनके शरीर के

दाहिने कंधे से सफेद रंग का सौम्य आकार वाला एक पुतला निकलता है जो 12 योजन में फैले दुर्भिक्ष, रोग आदि को दूर करके वापस आ जाता है।

अशुभ तैजस - मुनि को तीव्र क्रोध उत्पन्न होने पर 12 योजन तक विचार की हुई वस्तु का भस्म कर देता है और फिर उस संयमी मुनि को ही भस्म कर देता है। यह मुनि के बांयें कंधे से निकलता है। यह सिंदूर की तरह लाल और बिलाव के आकार का होता है।

5.कार्माण शरीर - ज्ञानावरण आदि आठ कर्मों के समूह को कार्मण शरीर कहते हैं।

प्रत्येक जीव के साथ तैजस और कार्मण शरीर अनादिकाल से ही साथ हैं। इन पाँच शरीरों में से हम मात्र औदारिक शरीर को ही आंखों से देख सकते हैं। शरीर से राग या अपनापन दुःख का कारण है। इसलिये सभी शरीरों से अपनापन छोड़कर आत्मा में अपनापन करना चाहिये।

एक रुपये का कमाल

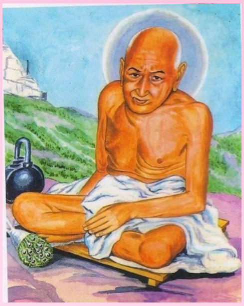

सन् 1905 में क्षुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी जी को न्याय शास्त्र पढ़ने की इच्छा हुई तब वे बनारस के क्वींस कॉलेज के न्याय के एक प्रसिद्ध प्रोफेसर के पास गये और उनके चरणों में एक रुपया रखते हुये निवेदन किया कि आप मुझे जैन न्याय ग्रन्थों को अध्ययन कराने की कृपा करें। तब प्रोफेसर बोले कि तुम तो ब्राह्मण हो फिर जैन ग्रन्थों को क्यों पढ़ना है तो वर्णी जी ने उत्तर दिया - न तो मैं ब्राह्मण हूँ, न मैं क्षत्रिय हूँ, मैं तो जैन अनुयायी वैश्य हूँ। इतना सुनकर वे प्रोफेसर भड़क गये और गुस्सा होकर वर्णीजी को वहाँ से भगा दिया।

वर्णी जी बहुत दुःखी हुये और उन्होंने अपने अपमान को पुरस्कार माना और फिर से गुरु की खोज मे निकल पड़े। अंततः एक श्वेताम्बर विद्यालय में न्याय शास्त्रों का अध्ययन किया पर उनके हृदय में दिगम्बर धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उनकी भावना थी कि बनारस में एक दिगम्बर विद्यालय की स्थापना होना चाहिये। इस कार्य के लिये उन्होंने एक रुपये के 64 पोस्टकार्ड खरीदे और विद्यालय स्थापना की भावना लिखकर समाज के 64 प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भेज दिये। परिणामस्वरूप उनके लगातार प्रयासों से सनः 1906 में बनारस में स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना हो गई। वर्णी इस महाविद्यालय के संस्थापक होने के साथ इसके प्रथम विद्यार्थी रहे और बाद में इस विद्यालय से पढ़कर अनेक जैन प्रकाण्ड विद्वान बने।

क्या आप पानी छानने की विधि जानते हैं ?

जैनी व्यक्ति की पहचान के मुख्य तीन लक्षणों में एक है पानी छानकर पीना अर्थात् अनछन पानी का प्रयोग न करके जैन शास्त्रों की विधि अनुसार पानी छानकर पीना जैनी श्रावक का कर्तव्य है।

जल क्यों छाना जाता है ?

अनछने छल में अनेक सूक्ष्म जीव रहते हैं, उनकी रक्षा के लिये जल का छाना जाता है। बिना छने जल का प्रयोग करने से उसमें रहने वाले जीवों का मरण हो जाता है और अनछना जल पीने वाले व्यक्ति को हिंसा का दोष लगता है तथा अनछना जल पेट में जाकर अनेक तरह के रोग उत्पन्न करता है इसलिये सदैव छने जल का प्रयोग करना चाहिये। जैन धर्म के अनुसार अनछने पानी की एक बूंद में संख्यात त्रस जीव और असंख्यात जलकायिक जीव हैं।

कैसे छानें -

पानी छानने के लिये सूती या लट्ठे का कपड़ा लेना चाहिये जो कि बर्तन को अच्छी तरह से ढक सके या बर्तन के मुख से बड़ा हो। छन्ना इतना मोटा होना चाहिये कि उसमें से सूर्य की किरणें आर-पार प्रवेश न कर सकें। ऐसे छन्ने से सावधानीपूर्वक सूखे बर्तन में या अच्छी तरह धुले हुये बर्तन में पानी छानना चाहिये। पानी छानने के बाद छने हुये पानी से छन्ने को जल वाले स्थान पर जिवानी देना चाहिये। जीवों की जितनी अधिक रक्षा हो सके - ऐसा प्रयास करना चाहिये।

छने हुये जल को 48 मिनिट तक उपयोग कर सकते हैं। इसके बाद उसमें पुनः जीवों की उत्पत्ति होने लगती है इसलिये 48 मिनिट के बाद पुनः छानकर प्रयोग करना चाहिये।

छने हुये जल में लौंग, सौंप, अनार का छिलका आदि डालकर प्रासुक किया जा सकता है। इससे छने की मर्यादा छः घंटे की हो जाती है।

उबले हुये जल की मर्यादा 24 घंटे की होती है।

पानी की थैली का उपयोग आगम के अनुसार सही नहीं है इससे पानी सही तरीके से नहीं छनता। फिर भी यदि बिल्कुल बिना छने पानी से अच्छा तो पानी की थैली लगा लेना चाहिये। पानी छानने के बाद तुरन्त पानी की थैली को धोकर सुखा देना चाहिये। थैली बहुत देर तक नल में बंधी होने से उसमें अनंत जीवों का घात हो जाता ध्यान रहे कि रंगीन कपड़े की थैली का उपयोग नहीं किया जा सकता।

बिसलरी का पानी पीने में अनछने पानी का ही दोष लगता है।

पानी को छानकर ही उपयोग करना चाहिये यही जैनी श्रावक की मुख्य पहचान है।

क्या चाणक्य जैन मुनि थे ...?

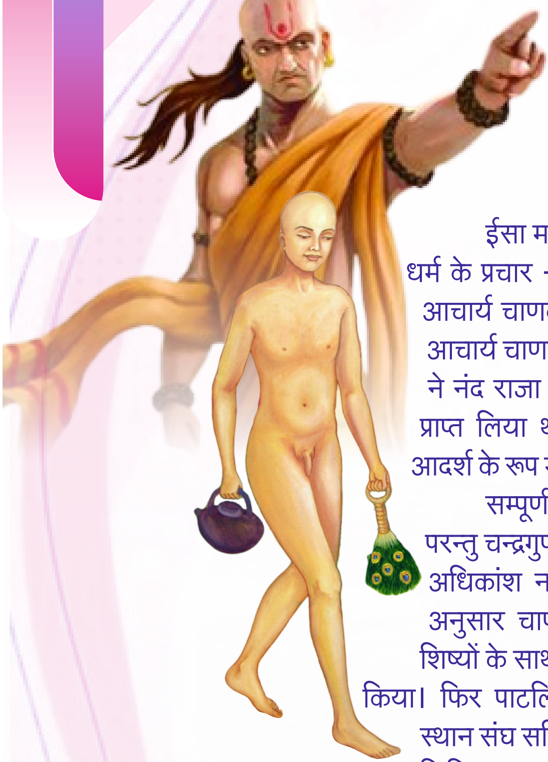

ईसा मसीह के 400 वर्ष पहले अनेक महापुरुषों ने जैन धर्म के प्रचार - प्रसार में योगदान दिया। इनमें से ही एक थे आचार्य चाणक्य थे जो कि सम्राट चन्द्रगुप्त के मंत्री थे और आचार्य चाणक्य की नीतियों के मार्गदर्शन में सम्राट चन्द्रगुप्त ने नंद राजा को हराकर अपना पाटलिपुत्र का राज्य वापस प्राप्त लिया था। आचार्य चाणक्य भारत की राजनीति में आदर्श के रूप में विख्यात हैं।

सम्पूर्ण जगत आचार्य चाणक्य को ब्राह्मण मानता है परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा बनाने के बाद उनके जीवन को अधिकांश नहीं जानते। अनेक जैन और अन्य ग्रन्थों के अनुसार चाणक्य ने अपने जीवन के अंत में अपने 500 शिष्यों के साथ दिगम्बर मुनि की दीक्षा ली थी और कठोर तप किया। फिर पाटलिपुत्र अंतगर्त महाकौंचपुर के गोकुल नाम के स्थान संघ सहित पहुँचे और स्वयं समाधि मरण किया था। सिरिचन्द द्वारा रचित कहकोसु एवं नेमिदत्तजी रचित आराधना कोष में भी चाणक्य की यही कथा मिलती है। श्वेताम्बर ग्रंथ आवश्यक - सूत्र वृत्ति, आवश्यक नियुक्तिचूर्णि, उत्तराध्ययन सूत्र टीका एवं परिशिष्ट पर्व में भी चाणक्य के जैन मुनि होने का उल्लेख है।

इस प्रसंग में सुप्रसिद्ध इतिहासकार राइस डेविड्स का यह कथन पढ़ने योग्य है -The Linguistic and Epigraphic evidence so far available con firms in many respects the general reliability of traditions current amongst the Jainas... 8 अनेक भाषा और पाण्डुलिपि के उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार जैनों की पीढ़ी और परम्परा विश्वास करने योग्य है। THE JAIN SOURCES OF THE LIFE STORY OF CHANDRAGUPTA AND CHANKYA और श्री कामताप्रसाद जैन की पुस्तक तीर्थंकरों का धर्म पुस्तक में लेखक ने सिद्ध किया है कि चाणक्य जैन कुल से ही जैन परिवार में जन्मे थे और जीवन भर जैन बने रहे और एक तपस्वी के रूप में जीवन यापन किया।

प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलायें पुस्तक के अनुसार जैन इतिहास में चाणक्य कुटिल नीतिकार होने पर भी हृदय से बहुत कोमल थे। सम्राट चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से आग्रह किया कि आप मेरे पुत्र बिम्बसार का राज्य कार्य में मार्गदर्शन करें। इसलिये अपना राजनैतिक कार्य पूरा होने के बाद अपना कार्य राधागुप्त को सौंपकर वे तुरंत नग्न दिगम्बर जिनदीक्षा धारणकर घोर तप करने लगे।

प्रेरक प्रसंग

स्वाभिमान

कविवर पण्डित भागचंदजी का जन्म मध्यप्रदेश के अशोक नगर जिले के ईसागढ़ गांव में सन् 1822 में हुआ था। वे बहुत गरीब थे परन्तु बहुत स्वाभिमानी थे। गरीबी होने के बाद भी वे किसी से सहायता नहीं मांगते थे। वे बिना किसी लोभ के जिनवाणी की सेवा करते रहे। जब उनके घर में कुछ नहीं बचा तो एक दिन रात में चुपचाप अपनी पत्नी और 2 बेटों और 1 बेटी के साथ दूसरे नगर में कुछ काम की तलाश में रवाना हो गये। उस समय यातायात के साधन नहीं होने से वे पैदल ही चलते रहे। 2 दिन भूखे ही चलते रहे और किसी के सहयोग से जयपुर पहुँचकर एक धर्मशाला में ठहर गये।

दूसरे दिन काम की तलाश में निकलने के पहले जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करने के लिये जिनमंदिर गये वहाँ पूजा के बाद स्वाध्याय सभा में बैठ गये और श्रोता बनकर सभा के दौरान गोम्मटसार ग्रन्थ के कठिन प्रश्नों के उत्तर दिये और प्रवचन के बाद, सांची तो गंगा यह वीतराग वाणी, जिनवाणी स्तुति गाई जब लोगों ने उनके द्वारा यह सुन्दर स्तुति सुनी तो सभी प्रसन्न हो गये। उपस्थित श्रोताओं ने उनका परिचय पूछा और कहा कि यह स्तुति तो कविवर भागचंदजी की है। तो कविवर बोले - मैं वही भागचंद हूँ। यह सुनकर समाज के लोगों ने उनसे भोजन और आने का कारण पूछकर उनका सहयोग करना चाहा तो उन्होंने सहयोग लेने से मना कर दिया और कहा कि मैं आपसे सहयोग ले लूँगा पर आपको यह सहयोग वापस लेना होगा। 6 दिन बाद समाज के सहयोग से कपड़े का व्यापार प्रांरभ किया और 5 वर्ष में स्थिति अच्छी होने पर समाज की राशि और दुकान वापस कर दी।

प्यारी कवितायें

– ब्र.सुमतप्रकाश जी

मिन्नी एक बड़ी शैतान,
करती थी सबको हैरान।
सुन्दरता का मान था,
आतम का ज्ञान था।
पुण्य पाप का फल पाते,
फिर क्यों इतना इतराते?
रूप काम न आयेगा,
यहीं पड़ा रह जायेगा।।

हाथी की करुणा

एक भयानक जंगल था। उसमे बहुत सार जानवर रहते थे। इन जानवरों में एक दयालु हाथी और एक खरगोश भी थे। एक जंगल में भयानक आग लग गई। आग जंगल में चारों ओर फैलने लगी। सब जानवर अपनी - अपनी जान बचाने में लग गये लेकिन हाथी अपनी सूंड़ों से जंगल के पेड़ों को तोड़ - तोड़कर गिरानो लगा और एक बड़ा मैदान बना दिया। वह हाथी सभी जानवर उस मैदान में इकट्ठे होने लगे और पूरा मैदान जानवरों से भर गया। हाथी भी वहीं खड़ा था। हाथी के पेट के नीचे भी छोटे जानवर आकर खड़े हो गये। तभी हाथी को पैर में खुजली हुई तो उसने अपना पैर उठाया तो उसके पैर की जगह पर खरगोश आकर बैठ गया। हाथी ने विचार किया कि यदि मैं अपना पैर नीचे रखूँगा तो यह खरगोश मर जायेगा यह तो अच्छा नहीं होगा। हाथी अपने पूर्व भव के संस्कार से सोच रहा था कि किसी की हिंसा करने में महापाप है और किसी की जान बचाना पुण्य है। इसलिये हाथी ने अपना पैर ऊपर ही मोड़े रखा।

जंगल में ढाई दिन तक आग लगी रहा लेकिन हाथी ने अपना पैर नीचे नहीं किया। सभी जानवर भी ढ़ाई दिन तक उसी मैदान पर रहे। इतना बड़ा शरीर होने के कारण उसका पैर अकड़ गया। आग बुझने के बाद सभी जानवर अपने - अपने स्थान पर चले गये। जब हाथी ने अपना पैर जमीन पर रखना चाहा तो नीचे गिर गया। अब वह हाथी न खड़ा हो सकता था और न ही चल सकता था। तीन दिन भोजन और पानी के बिना रहने के कारण वह हाथी मर गया।

जीव रक्षा के शुभ भाव के कारण हाथी मरकर अगली पर्याय में राजा श्रेणिक के पुत्र के रूप में जन्म लिया। उसका नाम मेघकुमार था। एक बार मेघकुमार भगवान महावीर के समवशरण में गया। भगवान महावीर की वाणी सुनकर उसे संसार से वैराग्य हो गया और मुनि दीक्षा ले ली। अब मेघकुमार मेघ मुनि बन गया।

मेघ मुनि ने घोर तप किया और अष्ट कर्मों का नाश करके सिद्धपद की प्राप्ति की।

शील और शक्ति

वत्स देश के रौरकपुर नगर में राजा उदयन राज्य करता था। उनकी रानी का नाम प्रभावती था। रानी को जैन धर्म पर बहुत आस्था थी। रानी की एक सेविका ने सन्यास लिया और आश्रम में रहने लगी। एक बार वह सेविका रौरकपुर आई तो उसने रानी को मिलने के लिये बुलाया तो रानी उससे मिलने नहीं गई तब वह सेविका स्वयं रानी से मिलने राजमहल पहुँच गई। उस सन्यासिन सेविका के महल में आने पर रानी ने उसका स्वागत नहीं किया और न ही मिलने आई। सन्यासिनी ने इसे अपना अपमान समझा और रानी प्रभावती का सुन्दर चित्र बनवाया और उज्जैन के राजा चण्डप्रद्योत को दिखाया। चित्र में रानी की सुन्दरता देखकर चण्डप्रद्योत रानी पर मोहित हो गया और उसे पाने के उपाय सोचने लगा।

एक बार राजा उदयन किसी काम से दूसरे राज्य गये थे तभी राजा चण्डप्रद्योत ने रानी प्रभावती को पाने के लिये रौरकपुर पर आक्रमण करने के सेना को रौरकपुर चलने का आदेश दिया। चण्डप्रद्योत के आक्रमण की सूचना पाकर रानी जिनमंदिर चली गई और वहाँ बहुत भावों से जिनेन्द्र भगवान की भक्ति - पूजन की और सेना में युद्ध का बिगुल बजा दिया और स्वयं हाथ में तलवार लेकर युद्ध में कूद पड़ी। रानी की पवित्रता और पुण्य के प्रभाव से थोड़ी ही देर में चण्डप्रद्योत की सेना भागने लगी। रानी ने निर्भय होकर अपने शील और अपने देश की रक्षा की।

जब राजा उदयन लौटकर आये तो उन्हें सारी घटना पता चली तो उन्हें संसार से वैराग्य हो गया। उन्होंने समस्त भोगों को त्याग कर मुनि दीक्षा ले ली। राजा के मुनिदीक्षा के समाचार सुनकर रानी प्रभावती ने भी वैराग्य धारण किया और सम्यग्दर्शन पूर्वक आर्यिका व्रत धारण किया।

अब नहीं बोलूँगी

दादी ! जय जिनेन्द्र

जय जिनेन्द्र बिटिया।

कैसी हो आप और आपकी तबियत कैसी है ?

तबियत ठीक नहीं है बिटिया। पैरों में बहुत दर्द रहता है, एक कदम भी नहीं चला जाता।

हाँ दादी! पहले से बहुत कमजोर भी लग रहीं हैं आप।

हाँ! अब तो मंदिर जाना भी बंद हो गया। पहले तो सारा काम दौड़ - दौड़ कर लेती थी। अब तो एक गिलास भी नहीं उठाया जाता।

दादी! उम्र का असर है।

हाँ! बिटिया वो तो है परन्तु दर्द सहन नहीं होता। इससे अच्छा तो मर जाती तो अच्छा था।

दादी! ऐसी बातें नहीं करते...

तो क्या करूँ बिटिया ?

देखो दादी! आपने ही हमें सिखाया है कि मरना तो सबको ही है। जन्म और मरण तो सब संसारी जीवों को लगा रहता है तो इसमें आश्चर्य क्या ?

बिटिया! इससे अच्छा तो हार्ट अटैक से मर जाती या कोई घटना में मर जाती तो कम से कम ये दर्द तो सहन नहीं करना पड़ता।

दादी! ऐसा नहीं सोचते और हार्ट अटैक से या दुर्घटना में मरने वालों को मृत्यु अच्छी नहीं होती।

क्यों ?

अरे दादी! उन्हें अपने अंतिम समय का पता हीं नहीं चला और उनकी अचानक मृत्यु हो गई। जो बीमार हैं उन्हें कम से कम अपने परिणाम संभालने का, जिनवाणी सुनने का अवसर तो है। आप स्वयं सोचिये कि यदि कोई मेहमान अचानक आ जाये तो उसकी सेवा अच्छी होगी या जिसका पता है कि वो आने वाला है उसकी सेवा अच्छी होगी ? तो बीमार व्यक्तियों की मृत्यु तो बताकर आने वाली मेहमान है।

लेकिन बिटिया! इस दर्द का क्या करूँ ?

दादी! ये तो आप भी अच्छी तरह जानतीं हैं। हमने जो विराधना का पाप किया है उसका फल असाता में भोगना ही पड़ेगा इसलिये अपने मन को पूजन- स्तुति, प्रवचन या स्वाध्याय आदि में लगाइये इससे आपके परिणामों में शांति मिलेगी।

बात तो तेरी सही है बिटिया।

और ये मरने वरने की बात छोड़ दीजिये। बार - बार मरने की बात, दर्द को याद करने से तीव्र असाता कर्म का बंध होता है।

हाँ बिटिया! पर दर्द बहुत है।

फिर वही बात। समाधि मरण पाङ्ग में और सैकड़ों प्रथमानुयोग की कहानियों में आपने ही पढ़ा कि मुनिराजों और ज्ञानियों के जीवन में कितने भयंकर उपसर्ग आये पर आत्मा की दृढ़ता के बल पर वे सबसे जीतकर आगे बढ़ गये। दादी इस संसार से जाना तो सबको ही है परंतु जाना कैसे है यह हमारे ऊपर निर्भर है।

तुम सच कह रही हो बिटिया।

थो दादी! मुझसे वादा करो कि आप गलत नहीं सोचेंगी और गलत बोलेंगी और अपने महान जैन धर्म की प्यारी - प्यारी बातों से अपने परिणाम संभालेंगी।

ठीक है बिटिया। अब कभी गलत न सोचूँगी और न ही बोलूँगी।

वाह दादी! ये हुई बात।

– विराग शास्त्री

वाराणसी

उत्तरप्रदेश की प्रसिद्ध नगरी वाराणसी पौराणिक रूप में अत्यंत विख्यात है। जैन धर्म के अतिरिक्त हिन्दू धर्म के अनेक ग्रन्थों और पौराणिक कथाओं में वाराणसी का नाम प्रमुखता से मिलता है। यह नगर अनेक ऐतिहासिक घटनाओं की साक्षी रहा है।

जैन धर्म के अनुसार वाराणसी की गंगा नदी के तट जैन घाट है। यहाँ सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक हुये हैं। महान ग्रन्थ तिलोयपण्णत्ति में उल्लेख है कि

वाराणसिअ पुहवी सुपइट्ठेहिं सुपास देवो य।
जेट्ठस्स सुक्ल बारभि दिणम्मि जादो विसाहाय।।

अर्थात् सुपार्श्व देव वाराणसी नगर में माता पृथ्वी और पिता सुप्रतिष्ठ के यहाँ ज्येष्ठ शुक्ला 12 के दिन विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न हुये।

आचार्य समंतभद्र की शिवपिण्डी वाली घटना भी वाराणसी में हुई। इसकी साक्षी के रूप में फटे महादेव का मंदिर आज भी यहाँ विराजमान है।

इसी वाराणसी नगर में क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णीजी ने 12 जून 1905 को स्याद्वाद महाविद्यालय का शुभारंभ किया था। इसके लिये उन्होंने अथक मेहनत की और एक रुपये के 64 पोस्टकार्ड खरीदकर देश के श्रेष्ठियों को भेजकर इस महाविद्यालय के लिये आर्थिक सहयोग प्राप्त किया था। इस महाविद्यालय में वर्णीजी ने स्वयं प्रथम विद्यार्थी के रूप में प्रवेश लिया और बाद में यहाँ से पढ़कर हजारों जैन विद्वान बने। बनारस विद्वानों की काशी भी कहा जाता था। यहाँ के जैन विद्यार्थियों ने देश के स्वाधीनता आंदोलन में भी अपना योगदान दिया और स्वयं वर्णीजी ने सुभाषचंद बोस की आजाद हिन्द सेना एक चादर दान दी। इस चादर की नीलामी से सुभाषचंद बोस को बड़ी धनराशि देश की सेवा के लिये प्राप्त हुई थी।

बनारस में अनेक दिगम्बर जिन मंदिर दर्शनीय हैं।

क्या

पटाखे फोड़कर आप अहिंसा व दया धर्म का पालन कर पायेंगे ?

क्या

पटाखे फोड़कर आप मानवता को कायम रख पायेंगे ?

जरा सोचिये -

पटाखे फोड़ने से क्या मिला ?

भगवान एवं संतों की वाणी का अपमान

भगवा

रा

सुख-

- क्षणिक मनोरंजन के लिये
- हमें बम विस्फोट में मरने
  अनंत जीवों को पटाखों
- हमें तो अग्नि की आंच भ
  डालते हैं, छोटी सी आवा
  जीवों को मौत के घाट उ

शारीरिक क्षति एवं जनहानि

जरा सोचिये : प्रतिवर्ष प
पटाखों से प्रतिवर्ष 70,000 बच्चो

धार्मिक ब

:

प्रकाश

कृपया इस पोस्टर को यथा स्थान पर लगाव

वायु
प्रदूषण की
अधिकता

करोड़ों की
सम्पत्ति
का नुकसान

गंदगी का
साम्राज्य

अनंत निर्दोष
जीवों की
हत्या

अतः जियो और जीने दो का अमर संदेश देने वाले

न महावीर के निर्वाण दिवस पर हिंसा का तांडव मत करिये,

म,बुद्ध,नानक एवं संतों–महापुरुषों के अहिंसा संदेश का पालन कीजिये ।

-शांति के पर्व दीपावली एवं अन्य जीवों के यमराज न बनें ।

अनंत जीवों की हत्या क्यों?

वाले व्यक्तियों से सहानुभूति होती है तो फिर
रूपी बम विस्फोट से मारने जैसी निर्दयता क्यों?

ी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला
स से बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत
तरते देख कर हमारे हाथ क्यों नहीं कांपते ?

यह हिंसा के यमराज नहीं, अहिंसा के सम्राट के निर्वाण का महापर्व है ।

आँखों एवं
स्वास्थ्य
पर बुरा असर

अनंत पाप
का बंध

धन की
बर्बादी

समय की
बर्बादी

ाखों से 2 लाख लोग अपंग, पटाखों की आग से देश में प्रतिवर्ष 200 करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान,
की आंखों की रोशनी कम या समाप्त, पटाखा फैक्ट्री में सैकड़ों कर्मचारियों की घटनाओं में मृत्यु हो जाती है ।

ाल त्रैमासिक पत्रिका

संपादक – विराग शास्त्री

चहकती चेतना के सदस्य बनिये

ाक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि., सर्वोदय 702, फूटाताल, जबलपुर मो.9300642434

कर अहिंसा अभियान के सहभागी बनें ।

यूथ कन्वेंशन भोपाल की झलकियां

प्रसन्नता का रहस्य

एक कौवा अपने काले रूप रंग से बहुत दुःखी था। वह सोचता था कि सारे पक्षियों में मैं ही सबसे बदसूरत हूँ। न तो मेरी आवाज अच्छी है और न ही मेरे पंख सुंदर हैं। मैं काला - कलूटा हूँ - ऐसा सोचते रहने से उसके अंदर हीन भावना भरने लगी और वह हमेशा बीमार रहने लगा।

एक दिन बगुले ने उसकी हालत देखकर उससे पूछा कि भाई! तुम बहुत दुखी दिखाई दे रहे हो और पहले से कमजोर भी हो गये हो। क्या बात है? कौवे ने दुखी मन से कहा कि बगुले भाई! तुम कितने सुंदर और गोरे हो और मैं कितना काला और बदसूरत। मेरा तो जीना ही बेकार है। यह सुनकर बगुला बोला - भाई! मैं कहाँ सुन्दर हूँ? मैं तो पूरा सफेद हूँ, कोई वैरायटी ही नहीं है। मुझसे सुंदर तो तोता है। उसकी सुन्दर लाल चोंच और हरे- हरे पंख हैं। अब कौवा उत्सुकता से तोते के पास पहुँचा और तोते से बोला - भाई! इतना सुन्दर रूप पाकर तुम तो बहुत प्रसन्न रहते होगे ? तो तोता दुखी मन से बोला - भाई! मेरे पास एक ही हरा रंग है। मुझसे सुन्दर तो मोर है। उसके इतने बड़े और अनेक रंग वाले पंख हैं और इतनी प्यारी गर्दन और सिर पर मुकुट। फिर कौवा मोर से मिलने के लिये उसे ढूंढने लगा। जंगल के पक्षियों ने बताया कि मोर को शिकारी पकड़कर ले गये हैं और चिड़ियाघर में बंद कर दिया है। कौवा उड़कर चिड़ियाघर में मोर के पास पहुँचा तो देखा तो मोर पिंजरे में बंद था और मोर से बोला - भाई! तुम्हारे बारे में सुना तो बहुत था पर नजदीक से आज देखा है। तुम तो बहुत सुंदर हो। मोर सिर झुकाकर दुःखी मन से बोला - यही सुन्दरता मेरे बंधन का कारण बन गई। अच्छा हुआ तुम सुन्दर नहीं हो तभी आजादी से बाहर घूम रहे हो वरना यदि सुन्दर होते तो मेरी तरह इस पिंजरे में बंद होते।

आज पहली बार कौवे को अपने रूप को देखकर प्रसन्नता हुई। जो मिला है वही सही है। सार की बात यह है कि दूसरों से तुलना करके जीवन भर दुःखी होने की जगह जो मिला है उसी में संतुष्ट रहना चाहिये यही प्रसन्नता का मंत्र है।

प्रेरक प्रसंग

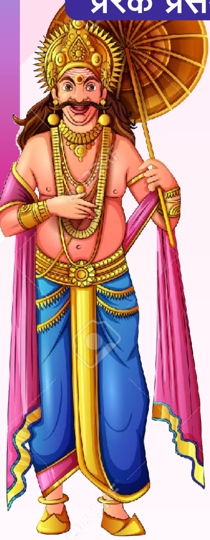

अवसर

राजा के यहाँ पुत्र का जन्म होने की खुशी में घोषणा की कि आज मैं जेल का निरीक्षण करूँगा और सभी कैदियों की एक - एक इच्छा पूरी करूँगा। राजा जेल पहुँचा और कैदियों से मिलना प्रारंभ किया। पहले कैदी से पूछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है तो कैदी हाथ जोड़कर बोला - महाराज! यहाँ जमीन पर सोने से मेरी कमर में दर्द रहता है। यदि बढ़िया गद्दा मिल जाये तो मेहरबानी होगी। राजा ने उसे गद्दा देने का आदेश दिया। दूसरे ने बढ़िया भोजन मांगा, तीसरे ने बढ़िया कपड़े मांगे, चौथे ने हर सप्ताह अपने परिवार के लोगों से मिलने की आज्ञा मांगी। इस तरह राजा सभी की इच्छायें पूरी करने का आदेश देता रहा। अंत में देखा तो एक कैदी चुपचाप बैङ्गा था तो राजा ने उससे पूछा - क्या तुम्हारी कोई इच्छा नहीं है ? बोलो तुम्हारी एक इच्छा पूरी की जायेगी। तो कैदी बहुत विनम्र भाव से बोला - महाराज! यहाँ जेल में बंद रहना ही कष्टकारक है। मुझे इस जेल से मुक्त कर दीजिये। राजा ने उसे तुरंत जेल से छोड़ने का आदेश दिया। यह देखकर सभी कैदी पछताते रह गये और अंतिम कैदी चतुराई से जेल से बाहर निकल गया।

इसी तरह हमें यह दुर्लभ मनुष्य भव अच्छे घर, परिवार, नौकरी, संयोग प्राप्त करने के लिये नहीं मिला बल्कि संसार से मुक्त होने की विधि अपनाने के लिये मिला परन्तु दुर्भाग्य से हम धन आदि की चिंता में सारा जीवन बरबाद कर देते हैं और अंत में पछताते हैं।

णमोकार मंत्र की आस्था

भारत के सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस रहे श्री डी.वॉय.चंद्रचूड़ ने कुछ दिन पहले एक इंटरव्यू में कहा कि मैं स्वयं तो जैन नहीं हूँ परन्तु मेरी जैनों के णमोकार मंत्र पर गहरी श्रद्धा है। प्रतिदिन कोर्ट के अपने ऑफिस की सीढ़ियां चढ़ते समय मैं णमोकार मंत्र का पाङ्ग करता था। णमोकार मंत्र का पाङ्ग करने से मेरे अंदर आत्मविश्वास बना रहता है और अच्छे काम करने की प्रेरणा मिलती है। इस इंटरव्यू में उन्होंने णमोकार मंत्र का उच्चारण भी किया और कहा कि मैं यही भावना भाता हूँ कि मुझसे कोई अन्याय न हो।

क्या जैनी कुत्ता पाल सकते हैं...?

आजकल फैशन के नये - नये तरीकों में कुत्ता पालना भी एक फैशन हो गया है। अक्सर सम्पन्न घरों में कुत्ता पालना सामाजिक स्टेटस का प्रतीक माना जाने लगा है और आश्चर्य यह है कि जैन समाज के व्यक्ति भी करुणा और दया के नाम पर कुत्ता पाल रहे हैं। पर हमें यह जानना चाहिये कि जैन धर्म के शास्त्रों के अनुसार हम कुत्ता, बिल्ली, तोता आदि पाल सकते हैं या नहीं

पहले के समय से आज भी गांवों में जैन समाज खेती के काम से जुड़ा हुआ है। खेती की आवश्यकता के अनुरूप पहले जैन किसान भी अपने घर में गाय और बैल पाला करते थे। वर्तमान में ट्रैक्टर आदि आने से उनकी आवश्यकता समाप्त हो गई है परन्तु शुद्ध दूध आदि के लिये आज भी कई जैन घरों में गाय पालने की परम्परा चल रही है। किसी भी प्रकार के जानवर घर में पाले जाने पर उनके भोजन आदि में हिंसा तो होती ही है। गाय के गोबर में असंख्यात त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं। गाय, बैल आदि तो शाकाहारी जानवर हैं और हमारे भारत देश की हिन्दू समाज में अनेक गुण होने के कारण गायों को पूज्य पद प्रदान किया गया है परन्तु कुत्ता आदि हिंसक जानवर जैन धर्म के अनुरूप तो है नहीं सामाजिक रूप से भी सही नहीं है। दुबई आदि कई देशों में शेर, सांप, मगरमच्छ, पालने का चलन है। कुत्ते को आगम में चाण्डाल के नाम से कहा गया है। उसकी प्रकृति मांसाहारी है।

कुत्ता स्वभाव से हिंसक और आक्रामक प्राणी है। देश में प्रतिवर्ष स्ट्रीट डॉग्स के द्वारा काटे जाने के लगभग 37 लाख मामले आते हैं और घर में पाले हुये कुत्ते भी कभी - कभी क्रोध में घर के सदस्यों पर

आक्रमण करते हैं। कुत्ते के द्वारा काटे जाने पर रेबीज जैसी जानलेवा बीमारी हो सकती है। पिछले जून माह में उत्तरप्रदेश के बुलंदशहर के प्रतिभावान स्टेट लेबल के कबड्डी के गोल्ड मेडलिस्ट खिलाड़ी ब्रजेश सोलंकी एक कुत्ते को पानी में डूबता देखकर उसे बचाने के लिये पानी से निकाला। उस समय उस कुत्ते ने ब्रजेश को चाट लिया। रेबीज बीमारी हो जाने से मात्र 1 माह बाद ब्रजेश की तड़प - तड़पकर दर्दनाक मृत्यु हो गई। इसके वीडियो भी यूट्यूब पर उपलब्ध हैं।

कुत्ते के शरीर पर बहुत घने बाल होते हैं और कुत्ता दिन भर घर में घूमता है तो पूरे घर में उसके बाल गिरते हैं जिससे पूरे घर में अशुद्धि होती है। चाहे कितना भी घर साफ करो उसके

बाल घर में गिरते ही रहते हैं। ऐसे घर में मुनिराज का आहार नहीं हो सकता इसका मतलब यह है कि कुत्ते पालने वाला मुनिराज या त्यागी व्रती विद्वान को आहार नहीं करा सकते।

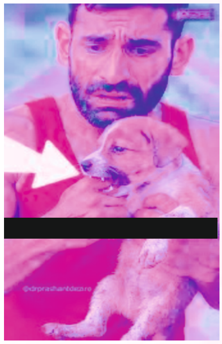

कुत्ते को मल मूत्र के लिये कुत्ते के मालिक घर से बाहर ले जाते हैं परन्तु उसका कोई भरोसा नहीं है कि वह घर में ही कब कहाँ मल मूत्र कर दे और जब कुत्ते बीमार होते हैं तो इसकी बहुत संभावना होती है। गाय के मल को गोबर कहा जाता है परन्तु कुत्ते को मल को गोबर नहीं कहा जाता और कुत्ते के मल को छूने के बाद नहाना अनिवार्य होता है।

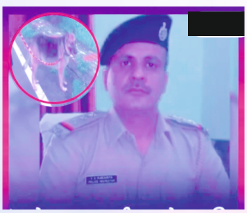

20 सितम्बर को ही अहमदाबाद के पुलिस इंस्पेंक्टर श्री वनराज मंझरिया को उनके पालतू जर्मन शेफर्ड कुत्ते का नाखून लग गया था। उनके कुत्ते का नियमित रूप से रेबीज वैक्सीनेशन होता था इसलिये नाखून लगने पर वनराज से सामान्य रूप से लिया। बाद में उनको रेबीज हो गया और अहमदाबाद के के.डी. हॉस्पिटल में एडमिट रहे परन्तु उनकी रेबीज से मृत्यु हो गई।

आप स्वयं विचार करें कि कुत्ता पालने वाले उचित करते हैं या अनुचित ?

जान से प्यारा पैसा

आज विश्व का लगभग प्रत्येक प्राणी धन के पीछे अपने जीवन की सारी शक्ति लगा रहा है। मनुष्य किसी भी प्रकार से धन कमाना चाहता था और धन कमाने और उसे संभालने के चक्कर में वह आत्मकल्याण तो करता ही नहीं बल्कि अपने परिवार और स्वास्थ्य को बरबाद कर लेता है।

एक ऐसी घटना घटी उत्तरप्रदेश के प्रयागराज में। यहाँ रहने वाला धीरज नाम का व्यक्ति लेप्रोसी अस्पताल में स्वीपर और गार्ड का काम करता था। वह अपनी माँ और बहन के साथ अस्पताल के ही क्वार्टर में रहता था और उसके पिता की मृत्यु के बाद अपने पिता की जगह नौकरी मिल गई। पर वह बहुत कंजूस था। पूरे स्टॉफ में उसकी कंजूसी की चर्चा होती थी। धीरज ने इस डर से शादी नहीं कि कहीं उसकी पत्नी उसका सारा धन अपने कब्जे में न कर। इसी डर वह शादी नहीं कर पाया। उसे ट्यूबरक्लीसिस (टीबी) की बीमारी हो गई। डॉक्टर ने उससे सही इलाज कराने को कहा परन्तु कंजूसी के कारण इलाज नहीं कराया। इसी बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। बाद में उसकी बैंक पास बुक चेक का तो उसका बैंक बेलेंस देखकर सब दंग रह गये। उसकी पास बुक में 70 लाख रुपये जमा थे। धन की रक्षा करते करते अपनी दुर्लभ मनुष्य पर्याय बरबाद कर दी।

दुष्ट

खल अहि कूर सहावो तिणमहि खल अतिकूरता होई।
अहि मंतर उराचारो दुठ उराचारो य लोयातिय दुलहो।।57।। - सुदृष्टितरंगिणी

दुष्ट व्यक्ति और सर्प दोनों क्रूर स्वभाव वाले हैं पर उनमें दुष्ट व्यक्ति अतिक्रूर होता है क्योंकि सर्प का इलाज तो मंत्र से हो सकता है, पर दुष्ट व्यक्ति का इलाज तीनों लोकों में दुर्लभ है।

समाचार

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूर मलै में 30 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2025 तक जिनदेशना समयसार शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर में आध्यात्म की चर्चा हेतु पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, डॉ. सोनू जी अहमदाबाद, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मोरबी पधारे। प्रतिदिन पूज्य गुरूदेवरश्री के प्रवचन के सभी विद्वानों के प्रवचनों का विषय समयसार ग्रन्थराज ही रहा। प्रतिदिन पण्डित संभव शास्त्री के नेतृत्व में विधान का संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में देश के अनेक नगरों के लगभग 230 साधर्मी पधारे। सभी कार्यक्रम डॉ. विराग शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

- राजीव जैन, पोन्नूर

जिनदेशना यूथ कन्वेंशन के दो आयोजन ऐतिहासिक सफलता के साथ संपन्न

तीर्थधाम ज्ञानोदय - युवा वर्ग मे जिनधर्म के संस्कार प्रवाहित करने की भावना से विगत 4 वर्षों से आयोजित किये जा रहे जिनदेशना यूथ कन्वेंशन के आयोजनों की श्रृंखला में षष्टम जिनदेशना यूथ कन्वेंशन भोपाल - विदिशा रोड पर दीवानगंज स्थित तीर्थधाम ज्ञानोदय में 25 जुलाई से 28 जुलाई 2025 तक संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय मोटीवेशनल स्पीकर डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, विद्वान श्री संजय शास्त्री कोटा, श्री अनुभव जैन करेली, श्री विवेक जैन मलाड ने अपने विशिष्ट शैली से जिनधर्म के सिद्धांतों को युवा वर्ग तक पहुँचाया। इस कार्यक्रम में देश के अनेक नगरों के लगभग 250 युवाओं ने सहभागिता की। इस अवसर ज्ञानोदय सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने नाटक की प्रस्तुति की। प्रतिदिन प्रातः विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री अमित अरिहंत और श्री शुभम शास्त्री द्वारा किया गया।

आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली - इसी श्रृंखला के सप्तम यूथ कन्वेंशन आत्म साधना केन्द्र, घेवरा मोड़ दिल्ली में आयोजित हुआ। 14 अगस्त से 17 अगस्त तक आयोजित इस कार्यक्रम में विद्वान श्री विवेक जैन छिन्दवाड़ा, श्री विपिन शास्त्री नागपुर और श्री विवेक जी मुम्बई के द्वारा रोचक और जिनसिद्धांत के आधारभूत सिद्धांतों पर सुन्दर चर्चा संपन्न हुई। इस अवसर पर आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की बालिकाओं की सक्रिय और उत्साहपूर्ण उपस्थिति ने शिविर को विशेष भव्यता प्रदान की। इन बालिकाओं द्वारा नाटिका के साथ एक नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया गया। प्रतिदिन प्रातः विधान के साथ रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुये। इस कार्यक्रम संयोजन श्री ऋषभ शास्त्री उस्मानपुर, श्री संदीप शास्त्री, श्री भूपेन्द्र शास्त्री, श्री अनिकेत शास्त्री द्वारा किया गया। इस कार्यक्रमों में बालिकाओं के साथ लगभग 350 साधर्मियों ने तत्वज्ञान करा लाभ प्राप्त किया।

दोनों आयोजनों में प्रतिदिन पूज्य गुरूदेवश्री के सीडी प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। दोनों कार्यक्रमों का जिनदेशना के यूट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया। इस कार्य में श्री सुदीप शास्त्री जयपुर, श्री आभास जैन पुणे, श्री यश जैन करेली, श्री आयुष्मान जैन करेली का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इन कार्यक्रमों का निर्देशन डॉ. विराग शास्त्री द्वारा किया गया।

विज्ञान वाटिका प्रश्न पुस्तिका का विमोचन

दिगम्बर जैन समाज को स्वाध्याय के लिये प्रेरणा देने के लिये किये जा रहे प्रयासों के क्रम में दसवें वर्ष की विज्ञान वाटिका प्रश्न पुस्तिका का विमोचन दिल्ली के आत्म साधना केन्द्र में आयोजित हुये जिनदेशना यूथ कन्वेंशन के अवसर पर किया गया। इस प्रश्न पत्रिका में बालबोध पाठमाला पर आधारित लगभग 500 प्रश्न हैं। इसकी परिकल्पना पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर दिल्ली द्वारा की गई। श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता के विजेताओं को विशिष्ट समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा। इसे निःशुल्क प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी 9810487471 पर संपर्क कर सकते हैं।

जिनदेशना अहिंसा अभियान 2025

वीर निर्वाण महोत्सव दीपावली के अवसर पर पटाखों से होने वाली हिंसा के विरुद्ध चलाये जा अभियान के अंतर्गत प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष यह आयोजन किया जायेगा। इसके अंतर्गत प्रतिभागियों को एक फार्म भरकर दीपावली पर पटाखे न फोड़ने का संकल्प लेना होगा। वीर निर्वाण महोत्सव के बाद ऑनलाईन कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों का ड्रा निकाला जायेगा जिसमें विजयी होने वाले 600 प्रतिभागियों को डिजिटल प्रमाण पत्र के अलावा पुरस्कार भेजा जायेगा। साथ ही अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जायेगा। गत वर्ष इस अभियान में लगभग 3500 बच्चों ने सहभागिता की थी। जिनदेशना अभियान में सहभागी बनकर अहिंसा का जयघोष कीजिये।

जिनदेशना अहिंसा सारथी	- 51000/-
जिनदेशना अहिंसा प्रभावक	- 31000/-
जिनदेशना अहिंसा अनुमोदक	- 21000/-
जिनदेशना अहिंसा संरक्षक	- 11000/-
जिनदेशना अहिंसा सहयोगी	- 5100/-

सभी सहयोगियों को स्मृति चिन्ह समर्पित किया जायेगा।
आप अपनी स्वीकृति अभियान के निर्देशक डॉ. विराग शास्त्री से 9300642434 पर संपर्क कर सकते हैं।

अनुयोग ज्ञान पहेली

उत्तर : 1. अक्षत 2. अभिनंदननाथजी 3. आकाश 4. अष्टान्हिका 5. अनेकांत 6. अकम्पनाचार्य 7. अठारह 8. अकलंक 9. अष्टपाहुड़ 10. अभय 11. अक्षय तृतीया 12. अंतराय 13. अष्टापद 14. अंतरिक्ष पार्श्वनाथ

हमारे मुनिराज

प्रश्न - क्या दिगम्बर मुनिराज किसी जानवर को भोजन करा सकते हैं ?

उत्तर - मुनिराज चौबीस घंटे में निश्चित समय में एक बार ही आहार लेते हैं। एक बार लेने के बाद उनके समस्त प्रकार के आहार का कृत कारित अनुमोदना से त्याग हो जाता है। यदि मुनिराज किसी जानवर को भोजन करायेंगे तो उन्हें अनुमोदना का दोष लगेगा। श्रावकों को ही किसी भूखे जानवर को भोजन कराना चाहिये।

प्रश्न - क्या मुनिराज किसी जानवर के साथ फोटो खिंचवा सकते हैं ?

उत्तर - मुनिराज जानवर तो क्या किसी मनुष्य के साथ ही फोटो नहीं खिंचवा सकते। जब मुनिराज शरीर को ही अपना नहीं मानते इसलिये उन्हें शरीर के फोटो से शौक नहीं होता बल्कि वे तो इस तरह के प्रपंच से बचने का पूरा करते हैं। फोटो अज्ञानी संसारी के देह के प्रति आसक्ति का परिचायक है।

प्रश्न - क्या मुनिराज समाज के आगामी पंचकल्याणक, विधान आदि के कार्यक्रम निश्चित कर सकते हैं ?

उत्तर - मुनिराज को अनियत विहारी कहा जाता है यदि पहले से ही कार्यक्रम निश्चित करेंगे तो उनको नियत विहारी कहा जायेगा जो उनके पद पर दोष लगेगा। दूसरी बात मुनिराज निर्बन्ध होते हैं। आगामी कार्यक्रम में जाने का वादा कर वे समाज से बंध जाते हैं जो कि उनके पद के योग्य नहीं है।

प्रश्न - क्या कोई मुनिराज समाधि लेने वाले दूसरे मुनिराज को प्यास लगने पर पानी पिला सकते हैं ?

उत्तर - भगवती आराधना ग्रन्थ में ऐसा कहा कि यदि कोई मुनिराज समाधि की भावना कर रहे हैं और उन्हें प्यास होने के कारण आकुलता हो रही है तो उनकी सेवा करने वाले उन्हें पानी नहीं पिलाते क्योंकि यदि पानी पिलाने से उनके मुनि पद के मूलगुणों में दोष लगेगा और उन्हें पिला भी दिया जाये तो उन्हें फिर प्यास लगेगी इसलिये वे उनका उपयोग मन दूसरी जगह लगाने का प्रयास करते हैं। उन्हें जिनवाणी के सिद्धांतों के द्वारा आत्मा का संबल देते हैं और कहते हैं कि हे आत्मन् ! आपने अनादि काल से अनंतों बार जल का पान किया है अब अपने चैतन्य आत्मा के अतीन्द्रिय आनंद का रस पान करो।

प्रश्न - दीक्षा के बाद मुनिराज का नाम क्यों बदल दिया जाता है गृहस्थ अवस्था के नाम में क्या दोष है ?

उत्तर - गृहस्थी से सब प्रकार का संबंध टूट जाने से गृहस्थ अवस्था का नाम भी बदल दिया जाता है।

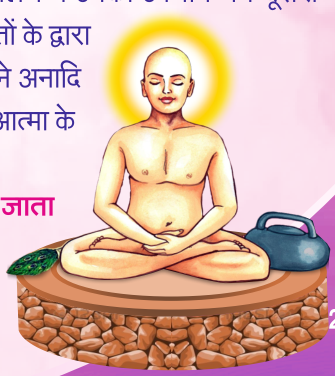

अनुयोग ज्ञान पहेली

इन सभी प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में और अ से प्रारंभ होना चाहिये :

1. पूजा का एक द्रव्य हूँ मैं - ....
2. मैं हूँ एक तीर्थंकर का नाम - ....
3. छः द्रव्यों में से एक - ....
4. एक शाश्वत पर्व का नाम - ....
5. जैन धर्म का एक सिद्धांत - ....
6. रक्षा बंधन की कथा में प्रसिद्ध एक आचार्य - ....
7. अरिहंत कितने दोषों से रहित हैं - ....
8. एक महापुरुष जिन्हें एक बार में याद हो जाता था - ....
9. पंच परमागम में से एक - ....
10. चार दानों में एक दान - ....
11. मुनि आदिनाथ को प्रथम आहार मिलने के दिन से प्रारंभ हुआ एक पर्व - ....
12. आठ कर्मों में से एक - ....
13. पंच परमेष्ठी में एक परमेष्ठी - ....
14. कैलाश पर्वत का दूसरा नाम - ....
15. एक अतिशय क्षेत्र जहाँ भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा बिना किसी के आधार से है - ....

हमारे नये परम सहायक

चहकती चेतना पत्रिका सम्पूर्ण जैन समाज की एक मात्र बाल-युवा पत्रिका है। इस पत्रिका के प्रति अनुमोदना का भाव व्यक्त करते हुये **विरांशी, सिद्धांत और जानकी गाला, मुम्बई** ने परम सहायक के रूप में स्वीकृति प्रदान की। चहकती चेतना परिवार आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये आपके धर्ममय जीवन की मंगल कामना करता है।

क्या ड्रेगन फ्रूट अभक्ष्य हैं...

वर्तमान में जैन समाज की कई शाही शादियों अथवा बड़े समारोहों में ड्रैगन फ्रूट रखने का चलन बढ़ रहा है। यहाँ तक कि कई धार्मिक समारोहों के सामूहिक भोजन में भी ड्रैगन फ्रूट का फैशन बढ़ता जा रहा है। आप जरा विचार करें कि ड्रैगन फ्रूट भक्ष्य हैं या अभक्ष्य हैं तो आप यह जान लीजिये कि ड्रैगन फ्रूट आलू प्याज की तरह ही अभक्ष्य हैं।

भक्ष्य अर्थात् जिनागम के अनुसार जो जीव रहित होने से खाने योग्य हैं और अभक्ष्य अर्थात् जो जीव सहित होने से हिंसा का कारण होने से खाने योग्य नहीं हैं।

यह अनजान फल (Exotic Fruits) हमारे दैनिक भोजन में शामिल होते जा रहे हैं।

स्ट्रॉबरी - (Strawberry) - आजकल बिस्किट, चॉकलेट, केक, शेक, आईसक्रीम में भी स्ट्रॉबरी का प्रयोग हो रहा है। बच्चों को यह बहुत पसंद आती है। स्ट्रॉबरी एक ऐसा फल है जिसके बीज अंदर की ओर नहीं बल्कि उसकी छाल अर्थात् उसके ऊपर के हिस्से में कांटे के रूप में पाये जाते हैं। कई बार पेड़ पर लगी हुई स्ट्रॉबरी के ऊपर के बीजों से अंकुर फूट जाते हैं और उस पर नये पत्ते आने लगते हैं। स्ट्रॉबरी को तोड़कर सुधारकर उसे कई हिस्सों में करके भी उपयोग में नहीं लाया जा सकता क्योंकि हिस्से करने के बाद उसके बीज जीव रहित नहीं होते। यह आलू की तरह अनंतकाय तो नहीं परन्तु सचित्त होने से खाने योग्य नहीं है।

ड्रैगन फूट (Dragan food)- कोरोना के काल में इम्यूनिटी बढ़ाने के नाम पर ड्रैगन फूट का प्रचार होने लगा था। ड्रैगन फूट अनंतकाय होने से जमीकंद की तरह ही अभक्ष्य है। ड्रैगन फूट अर्थात् कैक्टस की जाति का फल है। आगम के अनुसार जिसका पौधा और फूल अनंतकाय है तो उसका फल भी अनंतकाय वाला ही होगा। ड्रैगन फूट को सुधारने पर एक समान टुकड़े होते हैं। इसे सुधारने पर आलू आदि की तरह उसके रेशे आदि दिखाई नहीं देते, इसे गरम आदि करने पर भी आलू की तरह यह अनंतकाय वाला ही होता है इसलिये यह जैन श्रावकों के लिये सर्वथा अभक्ष्य है।

कीवी (Kiwi)- कीवी में काले - काले बहुत सारे बीज होते हैं। यह बीज भी सदा सचित्त होने से अभक्ष्य ही हैं। कीवी अनंतकाय तो नहीं है परन्तु सचित्त होने से हिंसा का दोष लगता है।

तुकमारिया (Basil Seeds) - गर्मी आदि के समय के लिये ठंडक के लिये तुकमारिया के बीजों का शरबत आदि बनाया जाता है। इसका प्रयोग फालूदा और जूस आदि में भी किया जाता है। बीज होने से वह अनंतकाय होने से अभक्ष्य है। इसे प्रासुक करके अथवा सुखाकर उपयोग किया जा सकता है।

प्यारी कवितायें

माँ छोटीसी पीछी दे दे
मैं मुनिवर बन जाऊँगा
फिर जंगल के बीच बैठकर
आतम ध्यान लगाऊँगा।
ये वादा करता हूँ माता,
तुझको नहीं रुलाऊँगा।
रत्नत्रय के पथ पर चलकर,
मुक्ति महल में जाऊँगा।।

– विराग शास्त्री

देश के विभिन्न प्रख्यात हिन्दू मंदिरों में जैन प्रतिमायें

1- महाराष्ट्र के यवतमाल जिले में स्थित सोमेश्वर मंदिर में विराजमान सोमेश्वर महादेव की प्रतिमा मूलतः जैन तीर्थंकर की प्रतिमा है जिसे अब महादेव के रूप में पूजा जाता है।

2. तमिलनाडु के मदुरै शहर के पंडी मंदिर में जैन तीर्थंकर की प्रतिमा को मुनियांडी भगवान के रुप में पूजा जाता है। दुःखद बात यह है कि इस प्रतिमा के सामने पशुओं की बलि दी जाती है। इन्हें मदुरै का रक्षक माना जाता है। इतिहासकार मानते हैं यह घुंघराले बाल वाली पद्मासन मुद्रा में जैन तीर्थंकर की प्रतिमा है।

3. छत्तीसगढ़ के बिलासपुर शहर के रतनपुर के विख्यात महामाया मंदिर के प्रागंण में जैन तीर्थंकर की कई प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं।

4.बिलासपुर के ही लोगों की आस्था के केन्द्र परघनिया बाबा मंदिर में खड्गासन मुद्रा में विराजमान तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा को हिन्दू समाज के लोग परघनिया बाबा के रूप में पूजते हैं।

5. बिलासपुर के ही गोंदईया के तालाब से प्राप्त भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर की 5 वीं और 6वीं शताब्दी की प्रतिमाओं को हिन्दू भगवान का रूप दे दिया गया है।

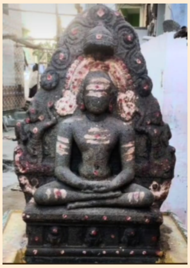

6. तमिलनाडु के कुलाथुर गांव में विख्यात हिन्दू मंदिर में जैन तीर्थंकर को हिन्दू भगवान के रूप में पूजा जा रहा है।

7. उड़ीसा के भैरवसिंहपुर में सुबाई, नंदपुर से लाई हुई दिगम्बर प्रतिमा को भैरवदेव के रूप में पूजा जा रहा है।

8. पश्चिम बंगाल के वर्धमान जिले के मंगलकोट में भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा को भगवान शिव के रूप में पूजा जाता है।

9. तमिलनाडु के पाथुर गांव में जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ को हिन्दू भगवान मुरुगा के रूप में पूजा जाता है।

10. मध्यप्रदेश प्रसिद्ध पर्यटक स्थल खजुराहों में जैन तीर्थंकर की प्रतिमा को काली के रूप में पूजा जाता है।

11. आंध्रप्रदेश के विजयनगरम में जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की कलिंग शैली की प्रतिमा है इसे अब परम्मा देवी

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर के अंतर्गत
श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विले पारला मुम्बई के सहयोग से

चहकती चेतना की ओर से प्रयास जोरदार
पटाखे न फोड़ने वालों को मिलेगा

जिनदेशना अहिंसा अभियान

ढेरों आकर्षक पुरस्कार

- **1** प्रथम पुरस्कार — सोने का सिक्का (1 Gram)
- **50** द्वितीय पुरस्कार — चाँदी के सिक्के (5 Gram)
- **550** तृतीय पुरस्कार — आकर्षक गिफ्ट हेम्पर

विश्व में अहिंसा धर्म के प्रबल प्रचारक के रुप में विख्यात भगवान महावीर का मंगलकारी **निर्वाण महोत्सव आगामी 20 अक्टूबर 2025** को आ रहा है, पर दुःखद तथ्य है कि अहिंसा के सम्राट के निर्वाण महोत्सव के दिन ही अनेक जैन साधर्मी और उनके बच्चे पटाखे फोड़कर अनंत जीवों की हिंसा करते हैं। वीर निर्वाण महोत्सव को अहिंसक रूप से भगवान महावीर की भक्ति के साथ मनाना चाहिये। **लोकप्रिय बाल-युवा पत्रिका चहकती चेतना इस वर्ष पटाखे न फोड़ने वालों के लिये एक आकर्षक योजना प्रस्तुत कर रही है।**

- यह योजना 5 वर्ष से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिये होगा।
- योजना में सहभागिता के लिये सर्वप्रथम आपको अपना नाम ऑनलाईन रजिस्टर्ड करना होगा।
- रजिस्ट्रेशन के लिये आप अपना नाम लिखकर 9752756445 पर व्हाट्सएप पर मैसेज कर फार्म लिंक प्राप्त करें।
- पटाखे नहीं फोड़ने वाले सभी बच्चों को संस्था द्वारा एक प्रमाण पत्र भेजा जायेगा। दीपावली के बाद निश्चित तिथि पर ऑनलाइन कार्यक्रम में ड्रा निकाला जायेगा और चयनित बच्चों को पुरस्कार भेजा जायेगा।
- बच्चे संलग्न संकल्प पत्र का प्रिंट निकालकर उसे भरकर अपना फोटो हमें व्हाट्सएप कर सकते हैं।
- इस योजना में शामिल सभी बच्चों को लकी ड्रॉ में शामिल किया जायेगा और लकी ड्रॉ में नंबर आने पर उन्हें पुरस्कार दिया जायेगा।

विराग शास्त्री, जबलपुर	सुदीप शास्त्री, जयपुर	अमित अरिहंत, भोपाल	श्री प्रतीक गांधी, इंदौर
निर्देशक	संयोजक	सह-संयोजक	मार्गदर्शक

आयोजक - चहकती चेतना पत्रिका एवं जिनेदशना

जिनेन्द्र भगवान

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
श्री 1008 महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, नीमच

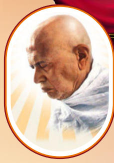

गुरुदेवश्री
कानजीस्वामी

मंगल आमंत्रण

श्री 1008 पार्श्वनाथ
दिगम्बर जिनबिम्ब
पंचकल्याणक
प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार, 30 नवम्बर से
शुक्रवार, 5 दिसंबर 2025 तक

स्थान : नीमच, मध्यप्रदेश

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
समिति अध्यक्ष
श्री महिपाल जी "ज्ञायक"
बांसवाड़ा

प्रतिष्ठाचार्य
पंडित श्री रजनी भाई दोशी हिम्मतनगर

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
समिति महामंत्री
श्री विजय जी बड़जात्या
इंदौर

निर्देशक	: पंडित देवेन्द्र कुमार जी बिजौलिया एवं पंडित संजय शास्त्री, कोटा
सह–निर्देशक	: डॉ. विराग शास्त्री, जबलपुर
संयोजक	: पंडित नगेशजी पिड़ावा
सह–संयोजक	: पंडित भूपेन्द्र शास्त्री, विदिशा एवं पंडित अमित अरिहंत, भोपाल
मंदिर निर्माण निर्देशन	: इंजी.विनोद जी निरखे, मलकापुर एवं श्री आदित्यजी पंचोलिया, सनावद

संपर्क सूत्र

संपर्क सूत्र : 9827390907, 9301966262, 9414687131, 9588001360